इनसे प्रेरणा लें

कभी-कभी हम सोचते हैं, दुनिया इक्कीसवीं सदी में पहुंच रही है। पर हम औरतों की हालत में कोई खास फ़र्क नहीं आया। तो फिर इस कम का फायदा क्या? हम आज भी गैर-बराबरी और अन्यायी पितृसत्ता के ढांचे में जी रहे हैं।

ऐसे समय हमारी मायूसी दूर करते हैं, जगह जगह औरतों के प्रेरणादायक-उत्साही अनुभव। ये औरतें और इनके ये संघर्ष अनदेखे और गुमनाम ही रह जाते हैं। ये अक्स हमें बहुत कुछ सिखाते हैं। हमारा हौसला बढ़ाते हैं। कठिनाइयों का सामना करने का साहस देते है। आइए, आज कुछ ऐसी ही सबलाओं से मिलते हैं। इनकी आपबीती सुनें और एक नये जीवन की खोज की प्रेरणा लें।

रजनी की हिम्मत

रजनी की शादी बंगलौर में हुई। उसका पति वहां किसी होटल में खाना खिलाने का काम करता था। ससुराल में विधवा सास और दो देवर थे। शादी के दो सालों में उसको एक बेटी हो गई। समय गुज़रा। पति उसे बहुत प्यार करता था। सलाह-मशविरा करके ही कोई काम करता था। सास को यह बर्दाश्त न हुआ। डर लगा कहीं बेटा बहू को लेकर अलग न हो जाए। बुरे दिन आए रजनी पर। उसके पति को किसी ने जहर दे दिया। रोती-पीटती रजनी मायके आ गई। मायके में पिता और भाई ने उसे भरपूर प्यार दिया। रजनी फिर भी सोचती। ऐसे कब तक चलेगा। उसने तय

किया वह अपने पांव पर खड़ी होगी।

आठवीं पास तो पहले ही थी। पिता की मदद से उसने दसवीं पास की। फिर सिलाई का डिप्लोमा किया। आज रजनी पंद्रह सौ रुपये कमाती है। एक पब्लिक स्कूल में सिलाई-टीचर है। अपने स्कूल में ही उसने अपनी बेटी को दाख़िल करा लिया है। उसने अपनी सास और देवर पर मुकदमा किया। दोनों को सज़ा हो गई। आज रजनी खुश है क्योंकि उसने अपनी ज़िंदगी संवार ली है।

शबनम बी ने हक़ पाया

शबनम बी एक पढ़ी-लिखी, मध्यम परिवार की लड़की थीं। बी.ए. पास करते ही मां-बाप ने शादी तय कर दी। पति डाक्टर था। ससुराल में सभी से मान-प्यार मिला। चार साल गुजर गए। एक दिन उस पर मुसीबतों का पहाड़ टूट गया। स्कूटर दुर्घटना में पति गुजर गए।

शबनम बी पर जिम्मेदारी का बोझ बढ़ गया। दो बच्चे थे। दोनों जुड़वां, साल भर के, दोनों विकलांग। इधर पति गुजरा, उधर ससुराल वालों ने उसे अभागिन-अशुभ मानना शुरू किया। जेठ ने भी शबनम बी पर बुरी नजर डाली। अब आसरा सिर्फ मायके का ही था। पर मायके से भी साफ़ हरी झंडी मिल गई। मां-बाप बोले-तू यहां रहेगी तो ससुराल का हिस्सा गंवा देगी। वैसे यह तेरा घर है। अक्लमंद को इशारा काफी। शबनम की रही-सही आस भी जाती रही।

शबनम ने हिम्मत नहीं हारी। उसने एक घर में बच्चे पालने की नौकरी कर ली। पैसे जोड़े, अपने नाम से जमीन खरीदी और उस पर दो कमरे का मकान बनाया। साथ ही ससुराल की जायदाद में अपने हिस्से का दावा किया। लंबी लड़ाई के बाद

उसे हक़ मिला। है न इनका जीवन हमारे लिए एक मिसाल।

रोज़ी की लगन

बचपन से ही रोज़ी गूंगी-बहरी थी। उसका एक हाथ भी दुर्घटना में कट गया था। रोज़ी के मां-बाप ने उसे बी.ए. पास कराया। फिर सोचा कोई अच्छा लड़का देख शादी कर दें। पर रोज़ी ने सख्ती से इनकार कर दिया। उसने सेक्रेटरी का दो साल का कोर्स किया। पर टाइपिंग नहीं कर पाती थी।

रोज़ी को अपनी एक सहेली से पता चला कि आजकल अस्पताल में कृत्रिम अंग लगने की संभावना है। सहेली के साथ रोजी अस्पताल गई। वहां उसको लकड़ी का हाथ लगाया गया। अब रोज़ी ने अभ्यास किया। दोनों हाथों से आज वह हमारी-आपकी तरह काम कर सकती है। उसने शादी न करने का फैसला किया है। एक सरकारी दफ्तर में नौकरी करती है और अपनी जिंदगी की नये सिरे से शुरुआत करके बहुत सुखी है। □